RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-04
April -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

वर्तमान परिदृश्य में भारत में पुरुष वेश्यावृत्ति : एक युवा दृष्टिकोण

सुबोध कान्त

शोध छात्र सामाजिक बहिष्करण एवं समावेशी नीति अध्ययन केंद्र सामाजिक विज्ञान संकाय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

ARTICLE DETAILS
Article History
Published Online: 15 April 2019

Keywords
पुरुष वेश्यावृत्ति, जिगोलो, यौनिकता, मेल ब्रोथल, यौन पर्यटन

***Corresponding Author**
Email: kantbhu[at]gmail.com

ABSTRACT
सामाजिक परिवर्तन के परिदृश्य में वेश्यावृत्ति की दुनियां में भी आमूल – चूल परिवर्तन आया है। जहाँ पुरुष पहले केवल स्त्रियों से यौन सेवा लेता था और उनकी यौनिकता को नियंत्रित व शोषित करता था, वहीं अब पुरुष भी यौन सेवा देने लगा है; हलाकि पुरुष वेश्यावृत्ति महिला वेश्यावृत्ति जैसा विस्तृत एवं विशाल तो नहीं है, परन्तु बहुत तेजी से यह अपने पाँव पसार रहा है। इसी विषय बिन्दु पर शोधकर्ता ने भारतीय शिक्षित युवाओं के दृष्टिकोणों को जानने व समझने का प्रयास किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में युवाओं के दृष्टिकोण से पुरुष वेश्यावृत्ति के अवधारणात्मक तथ्यों, विस्तार के कारणों, पुरुष यौनकर्मियों की अनुमानित समस्याओं व समाज पर इसके सकारात्मक व नकारात्मक परिणामों सहित अन्य पक्षों को खंगालने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तावना –

वेश्या और वेश्यावृत्ति का जिक्र जब भी हमारे सामने होता है तो अनायास ही हमारे जेहन में स्त्री का यौन सेवा प्रदाता तथा पुरुष का एक यौन सेवा उपभोक्ता के रूप में चित्र उभरकर सामने आ जाता है। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि सदियों से अधिकांश समाजों में पितृसत्ता कायम रही है और पुरुषों का स्त्रियों की यौनिकता पर लगभग पूर्ण नियंत्रण स्थापित रहा है। यह एक मुख्य कारक रहा है जिसके कारण सामान्य जन समुदाय में स्त्रियां यौन सेवा प्रदाता और पुरुष उस सेवा का उपभोक्ता रहा है, परन्तु वर्तमान समय में सामाजिक–सांस्कृतिक परिवर्तन, पश्चिमीकरण व भौतिकतावाद के गहन प्रभाव, मूल्यों मानदंडों में परिवर्तन तथा कुछ अन्य आर्थिक कारणों से वेश्यावृत्ति के व्यवसाय में भी आमूल – चूल परिवर्तन आया है। वर्तमान समय के सेक्स बाजार में पुरुष यौनकर्मियों (वेश्याओं) ने भी अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज की है। अब वह सिर्फ यौन सेवाओं का उपभोक्ता नहीं रहा, बल्कि यौन सेवा प्रदाता भी हो गया है। इन पुरुष यौनकर्मियों को जिगोलो, मेल एस्कॉर्ट, कॉल–बॉय, प्ले–बॉय, सैंकी–पैंकी, कगेमा आदि कई नामों से जाना जाता है।

पुरुष वेश्यावृत्ति का यह व्यवसाय महिला वेश्यावृत्ति की तरह सामाजिक रूप से भले ही उजागर और उस स्तर तक विकसित न हो, परन्तु यह छिपे रूप में ही बहुत तेजी से विकास व विस्तार कर रहा है। पुरुष वेश्यावृत्ति मूलतः महानगरों तथा चकाचौध भौतिकतावादी दुनियां में ही पनपना शुरू किया और अब हर नगरों में एजेंसीज व वेब साइट्स के जरिये अपने व्यवसाय को निरन्तर विस्तार प्रदान कर रहे हैं। इस वृत्ति को अपनाने वाले युवाओं में मुख्यतः महानगरों के बेरोजगार युवा तथा छोटे शहरों के युवा होते हैं, जो रोजगार न मिलने तथा कम समय में अधिक पैसे कमाने के लिए इस वृत्ति को बड़े आसानी से स्वीकार कर लेते हैं। इनको वेश्यावृत्ति परम्परागत तरीके से किसी वेश्यालय में नहीं करनी पड़ती, बल्कि कुछ विशेष क्षेत्रों (रेड लाइट एरिया) में सीधे आमने–सामने उपभोक्ता महिलाओं से सम्पर्क स्थापित करके या फोन द्वारा बात करके उपभोक्ता के घर या किसी होटल में इस वृत्ति को पूरा किया जाता है, जिससे अब उपभोक्ता और यौन सेवा प्रदाता दोनों की ही पहचान गुप्त रहती है, जो इस वृत्ति को बढ़ावा भी दे रहा है।

ऐतिहासिक पृष्टिभूमि –

पुरुष वेश्यावृत्ति के ऐतिहासिक पृष्टिभूमि पर दृष्टिपात करें तो हिब्रू बाइबिल और न्यू टेस्टामेंट में मेल ब्रोथल (पुरुष वेश्यालय) के प्रमाण मिलते हैं। न्यू टेस्टामेंट में ग्रीक, रोमन सभ्यता तथा हिब्रू बाइबिल में पुरुष वेश्यावृत्ति को एक पवित्र व आध्यात्मिक कार्य माना गया था। इसी का उल्लेख 'टेम्पल प्रोस्टीटूशन' की संज्ञा के साथ कई बार देखने को मिलता है। इसके अलावा समलैंगिकता की इनसाइक्लोपीडिया के अनुसार प्राचीन ग्रीस पुरुष यौनकर्मी सामान्यतः गुलाम होते थे तथा प्राचीन ग्रीस व रोम में पुरुष वेश्यालय होने की भी चर्चा मिलती है। संयुक्त राज्य अमेरिका में भी १७ वीं शताब्दी में पुरुष वेश्यालयों की शुरुआत हुई थी और यह १६ वीं शताब्दी तक विस्तारित होता रहा।

यूनाइटेड किंगडम में भी जब होमोसेक्सुअलिटी पर प्रतिबन्ध लगा तब वहां मेल ब्रोथल मौजूद थे; हालांकि पूर्ण व व्यवस्थित रूप से पहला पुरुष वेश्यालय 2010 में स्वीट्जरलैंड के ज्यूरिख शहर में खोला गया था। यदि भारत की बात करें तो ऐसा नहीं है कि भारत में पहले पुरुष यौनकर्मी नहीं हुआ करते थे, बल्कि उनकी और उनके उपभोक्ताओं की संख्या लगभग नगण्य थी। ये पुरुष यौनकर्मी सामान्यतः राजाओं के महलों तथा कुछ अन्य वरिष्ठ व धनाढ्य लोगों को ही यौन सेवा देते थे और इनकी पहचान सामान्यतः उजागर नहीं होती

RRIJM 2015, All Rights Reserved

थी; परन्तु कुछ दशकों से पुरुष वेश्यावृत्ति सक्रियता को प्राप्त कर रही है। इन्टरनेट पर ढेरों जिगोलो साइट्स संचालित की जा रही हैं और बाकायदा उनका एक किसी महानगर में मुख्यालय तथा अन्य शहरों में विस्तार को आसानी से देखा जा सकता है।

पुरुष वेश्यावृत्ति के प्रमुख स्वरूप –

जिगोलो या मेल एस्कॉर्ट –

महिला यौन उपभोक्ताओं को यौन सेवा प्रदान करने वाले पुरुष यौनकर्मियों को सामान्यतः जिगोलो या मेल एस्कॉर्ट के नाम से जाना जाता है।

कॉल बॉय –

जिन पुरुष यौनकर्मियों को कॉल करके यौन सेवा प्रदान करने को कहा जाता है तथा यौन सेवा की कीमत व जगह भी निश्चित किया जाता है, तो ऐसे पुरुष यौनकर्मियों को कॉल बॉय कहा जाता है।

गे फॉर पे –

ये वे पुरुष यौनकर्मी होते हैं जो गे नहीं होते हैं, परन्तु मुद्रा अर्जन के लिए पुरुषों से यौनिक सम्बन्ध स्थापित करते हैं।

जॉन/ट्रिक्स –

जिन पुरुष यौनकर्मिओं को यौन सेवा हेतु मुख्यतः किसी स्ट्रीट (गली), बार, पब आदि जगहों से सौदा करके यौनकर्म हेतु ले जाया जाता है, उन्हें जॉन या ट्रिक्स कहते हैं।

यूफेमिडम –

ये भी एक प्रकार के पुरुष यौनकर्मी होते हैं जो अश्लील नृत्य, मॉडलिंग, शरीर की मालिश तथा अन्य यौनिक सुविधाएं पैसे लेकर उपलब्ध करते हैं।

फेयरीज –

वे पुरुष यौनकर्मी जो किसी वेश्यालय (मेल ब्रोथल) में स्थायी रूप से यौन सेवा प्रदाता के रूप में कार्य करते हैं, उन्हें फेयरीज कहते हैं।

पुरुष वेश्यावृत्ति में सौदा करने के तौर–तरीके –

भारत में पुरुष वेश्यावृत्ति मूलतः महानगरों व बड़े शहरों में फैला हुआ है , परन्तु यह अपनी शाखाओं का विस्तार बहुत ही तेजी से अन्य छोटे शहरों तथा पुरुष यौनकर्मियों के मांग वाले इलाकों में कर रहे हैं। इस वृत्ति को विस्तार देने में सबसे ज्यादा इन्टरनेट साइट्स तथा कुछ अन्य सोशल साइट्स का प्रयोग किया जाता है। भारत में पुरुष यौनकर्मियों द्वारा यौन सेवा देने के मुख्यतः दो तरीके हैं। प्रथम, महानगरों तथा बड़े नगरों के कुछ सड़के व गलियां इस वृत्ति के लिए प्रसिद्द हैं। ये पुरुष यौनकर्मी इन गलियों में कुछ विशेष परिधान पहनकर (जिससे कि उन्हें पुरुष यौनकर्मी के रूप में पहचाना जा सके) सामान्यतः रात के दस से चार बजे तक घूमते रहते हैं और इन पुरुष यौनकर्मियों के उपभोक्ता वहां आते / आती हैं , उनसे सौदा (डील) करती हैं और उन्हें अपने साथ ले जाती हैं। द्वितीय , इस वृत्ति को ज्यादा विस्तार देने में इन्टरनेट का प्रमुख योगदान है। इन्टरनेट साइट्स तथा कुछ सोशल साइट्स पर ये पुरुष यौनकर्मी सामान्यतः जिगोलो या मेल एस्कॉर्ट के नाम से अकाउंट्स बनाये हुए हैं और सम्पर्क करने हेतु फोन नम्बर भी उपलब्ध किया गया है, जिससे कि उपभोक्ता इनसे फोन द्वारा सम्पर्क करते हैं और उपभोक्ताओं की पसन्द के अनुसार उनके घर या किसी होटल में सेवा प्रदान करते हैं। ये दोनों तरीके पुरुष यौन सेवा मुहैया कराये जाने के सबसे ज्यादा उपयोग किये जाने वाले माध्यम हैं। इसके अलावा नृत्य गृहों, गे बाथ हाउस, सेक्स क्लब, एडल्ट बुक स्टोर्स, नाईट क्लबों तथा अन्य माध्यमों से भी यह वृत्ति काफी फल – फूल रही है।

सेक्स टूरिज्म (यौन पर्यटन) के माध्यम से भी पुरुष वेश्यावृत्ति का भारत में बहुत तेजी से प्रसार हो रहा है। पर्यटन के दौरान यौन आनन्द लेने, यात्रा को रोमांचक बनाने आदि के लिए पुरुष यौनकर्मियों को 'टेम्पेरेरी बॉयफ्रेंड' की तरह किराये पर लिया जाता है। ये पुरुष यौनकर्मी यौन आनन्द देने के अलावा टूर गाइड, डान्सिंग पार्टनर आदि भी बनते हैं तथा कभी–कभी ये नशीली दवाओं की आपूर्ति भी करते हैं। कई बार कुछ महिलाएं किसी पुरुष यौनकर्मी को एक दीर्घ काल तक अपने पार्टनर की तरह रखती हैं और इस कृत्य को छुपाने के लिए सहजीवन सम्बन्ध (लिव इन रिलेशनलशिप) का सहारा भी लेती हैं।

कुछ पुरुष यौनकर्मियों की आपूर्ति करने वाली कम्पनियाँ (एजेंसीज) भी अस्तित्व में हैं, जो इन्टरनेट साइट्स द्वारा पुरुषों को प्रलोभन देकर इस वृत्ति में लाती हैं तथा उनका पंजीकरण होने के पश्चात् उनको सुरक्षा प्रदान करती हैं तथा समय – समय पर चिकित्सीय जाँच आदि करवाती हैं। इन पुरुष यौन कर्मियों को यह व्यवसाय शुरू करने से पूर्व बाकायदा महिलाओं से बात करने के तरीके, महिलाओं को सन्तुष्ट करने के तरीके तथा स्वयं को बाजार में बेचने के तरीकों आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है। साथ ही इन एजेंसीज द्वारा ग्राहकों को भी सुरक्षा मुहैया करायी जाती है। बदले में वे ग्राहकों व पुरुष यौनकर्मियों से कमीसन लेती हैं। पुरुष यौनकर्मियों से यह कमीशन सामान्यतः बीस प्रतिशत लिया जाता है।

अध्ययन विधि –

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा अध्ययन क्षेत्र के रूप में उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले में स्थित काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को चुना गया तथा समग्र के रूप में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के सामाजिक विज्ञान संकाय के स्नातकोत्तर एवं शोध छात्र – छात्राओं को चुना गया। अध्ययन के लिए

शोधकर्ता ने वर्णनात्मक शोध विधि का प्रयोग करते हुए उच्च शिक्षित युवा विद्यार्थियों की पुरुष वेश्यावृत्ति के विषय में विचारों एवं दृष्टिकोणों को जानने का प्रयास किया है।

इस शोध कार्य में आकड़ा संकलन हेतु प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों स्रोतों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आकड़ा संकलन के लिए उद्देश्यात्मक एवं सुविधाजनक प्रतिचयन विधि का प्रयोग करते हुए चुने गये प्रतिदर्शों से साक्षात्कार विधि द्वारा आकड़े संकलित किये गये। द्वितीयक स्रोत के रूप में शोधकर्ता ने शोध विषय पर लिखी गयी पुस्तकों, शोध पत्रों, समाचार पत्रों व वेब साइट्स आदि का प्रयोग किया।

बिन्दुवार शोध परिणाम –

1. दो – तिहाई (69 प्रतिशत) युवा पुरुष वेश्यावृत्ति से अंशतः परिचित हैं, जबकि एक – तिहाई (31 प्रतिशत) युवा पुरुष वेश्यावृत्ति के बारे में सामान्य से अधिक जानकारी रखते हैं।
2. 61 प्रतिशत युवाओं का मानना है कि पुरुष वेश्यावृत्ति भारतीय समाज में धीरे – धीरे पाँव पसार रहा है , जबकि 15 प्रतिशत युवाओं का कहना है कि यह भारतीय समाज में अधिक तेजी से प्रसारित हो रहा है, वहीं 23 प्रतिशत युवाओ को नहीं लगता कि पुरुष वेश्यावृत्ति भारत में प्रसारित हो रहा है।
3. एक तिहाई (31 प्रतिशत) युवाओ का मानना है कि भारत में पुरुष वेश्यावृत्ति पश्चिमी सभ्यता से आयी है, जबकि 15 प्रतिशत युवा ऐसा नहीं मानते, वहीं आधे से ज्यादा (54 प्रतिशत) युवा अपना मत स्पष्ट नहीं कर सके।
4. 38 प्रतिशत युवाओं को लगता है कि पुरुषों के लिए यह व्यवसाय आम तो आम गुठलियों के भी दाम (हर तरह से लाभ ही लाभ) जैसा है, जबकि लगभग आधे (46 प्रतिशत) युवाओं को ऐसा नहीं लगता; वहीं 15 प्रतिशत युवा इसपर अपना मत स्पष्ट नहीं कर सके।
5. लगभग एक – तिहाई (31 प्रतिशत) युवाओं का मानना है कि महिलाओं द्वारा यौन इच्छा पूर्ति का पुरुष वेश्यावृत्ति उचित साधन हो सकता है, जबकि 38 प्रतिशत युवा ऐसा नहीं मानते; वहीं 31 प्रतिशत युवा किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचने में असमर्थ रहे।
6. लगभग आधे (46 प्रतिशत) युवा मानते हैं कि विदेशी पर्यटन इस वृत्ति को आंशिक रूप से बढ़ावा दे रहा है , जबकि 23 प्रतिशत युवा समझते हैं कि अधिकतम बढ़ावा मिल रहा है य वहीं 15 प्रतिशत युवा मानते हैं कि विदेशी पर्यटन से इस वृत्ति को बढ़ावा नहीं मिल रहा है एवं 15 प्रतिशत युवा इस सम्बन्ध में विचार व्यक्त करने में असमर्थ रहे।
7. तीन – चौथाई (77 प्रतिशत) युवा यह जानते हैं कि यह वृत्ति भारत में वैध नहीं है, परन्तु 23 प्रतिशत युवाओं को यह जानकारी नहीं है।
8. लगभग दो – तिहाई (69 प्रतिशत) युवाओं का मत है कि भारत में पुरुष वेश्यावृत्ति को वैधता प्रदान नहीं की जानी चाहिए, जबकि 23 प्रतिशत युवा इसे वैधता दिए जाने के पक्ष में हैं, वहीं 08 प्रतिशत युवा इस सम्बन्ध में कोई मत स्पष्ट नहीं कर सके।
9. लगभग आधे (54 प्रतिशत) युवा यह नहीं मानते कि इस व्यवसाय में सहजीवन सम्बन्ध (लिव इन रिलेशनशिप) का सहारा लिया जाता है, जबकि 23 प्रतिशत युवा मानते हैं कि आंशिक रूप से इस सम्बन्ध का सहारा लिया जाता है; वहीं 23 प्रतिशत युवा इस विषय पर मत स्पष्ट करने में असमर्थ रहे।
10. लगभग एक – तिहाई (31 प्रतिशत) युवाओं का मानना है कि पुरुष यौनकर्मियों को भी महिला यौनकर्मियों की तरह ही यातनाएं झेलनी पड़ती हैं, जबकि 31 प्रतिशत युवाओं का मानना है कि कुछ हद तक ही पुरुष यौनकर्मियों को यातनाएं झेलनी पड़ती हैं; वहीं 38 प्रतिशत युवा अपना मत स्पष्ट नहीं कर सके।
11. अधिकांश युवाओं के अनुसार पुरुषों द्वारा इस वृत्ति को अपनाने के प्रमुख कारण गरीबी, बेरोजगारी, आर्थिक तंगी तथा कम समय में अधिक पैसा कमाने की लालसा है। इसके अलावा यौन सम्बन्धों की लत, अकेलापन, ब्लैकमेलिंग, वैवाहिक जीवन में पर्याप्त यौन सुख न होना आदि अन्य कारक भी पुरुषो को इस वृत्ति में धकेलते हैं।
12. उत्तरदाताओं के अनुसार महिलाओं द्वारा पुरुष यौनकर्मियों के उपयोग के प्रमुख कारण क्रमशः अकेलापन, सिंगल मदर होना, पति द्वारा उचित प्यार न मिलना, बहुत ज्यादा उम्र तक विवाह न होना, अत्यधिक यौन इच्छा या यौन लत होना है। इसके अलावा महिलाये इस सेवा का उपयोग फैशन में, नैतिक पतन होने के कारण तथा पश्चिमीकरण के प्रभाव के कारण भी करती हैं।
13. युवाओं के मतानुसार वैवाहिक सम्बन्ध विघटित होना, पारिवारिक – सामुदायिक जीवन बिखरना, बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ना, यौन रोगों से संक्रमित होना, नैतिकता का ह्रास होना आदि पुरुष वेश्यावृत्ति के भारतीय समाज पर प्रमुख नकारात्मक परिणाम हैं; जबकि एकल महिलाओं के लिए यौन इच्छा पूर्ति का सहज साधन होना, महिलाओं में यौन फ्रस्टेशन दूर करने में सहायक होना, महिलाओं के लिए यौन

आजादी का परिचायक होना आदि पुरुष वेश्यावृत्ति के कुछ प्रमुख सकारात्मक परिणाम भी हैं।

निष्कर्ष –

समाज के बदलते परिदृश्य में पुरुष वेश्यावृत्ति जैसी गम्भीर एवं ज्वलंत समस्या समाज के सामने आ खड़ा हुआ है और यह भारत में तेजी से विस्तारित भी होता जा रहा है; हलाकि छोटे शहरों के लोग व युवा वर्ग इस वृत्ति से गहन रूप से परिचित नहीं हुआ है, परन्तु महानगरों तथा बड़े व चकाचौध संस्कृति वाले नगरों में यह व्यवसाय तेजी से अपने पाँव पसार रहा है। जिगोलो, मेल एस्कॉर्ट, प्ले बॉय, कॉल बॉय, जॉन ट्रिक्स, कागेमा, सैंकी– पैंकी जैसे अनेक नामों से ये अपने वृत्ति को अंजाम दे रहे हैं। खुले स्रोतों के रूप में इंटरनेट पर इनके साइट्स हैं, खूब प्रचार – प्रसार हो रहा है। महानगरों के कुछ सड़कों व गलियों विशेष में रोज रात को इनके मेले सजते हैं, खुलेआम सौदे होते हैं; परन्तु अभी इस समस्या के निवारण के प्रति कोई औपचारिक कदम केंद्र व राज्य सरकारों द्वारा नहीं उठाया गया है। हमारा युवा वर्ग पुरुष वेश्यावृत्ति के नकारात्मक व सकारात्मक पहलुओं से भली – भाति परिचित तो है, परन्तु इस समस्या के प्रति उनका दृष्टिकोण भी बहुत परिवर्तनवादी और सक्रियतात्मक प्रतीत नहीं होता, जबकि यह व्यवसाय पुष्पित – पल्लवित होने के लिए वर्तमान समय में पर्यटन व सहजीवन सम्बन्ध को भी प्रयोग करने लगा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. साहनी, रोहिनी, संकर, वी. कल्याण, आप्टे, हेमन्त, (2008), प्रोस्टीटूशन एंड बियॉन्ड : एन एनालिसिस ऑफ सेक्स वर्कर्स इन इंडिया, सेज पब्लिकेशन, नयी दिल्ली.
2. मॉरिसन, टॉड जी., ह्वाइटहेड, ब्रूश डब्ल्यू., (२००७), मेल सेक्स वर्क : अ बिजनेस डूइंग प्लीजर, राउटलेज पब्लिकेशन, न्यू डेल्ही.
3. कुमार, सत्या (१७ जून २०१६) अ ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ मेल प्रोस्टीट्यूशन सर्विसेस इन इंडिया , मीडियम डॉट कॉम. https://medium.com/@satyendriya.discountbazaar/a-brief-history-of-male-prostitution-services-in-india-ad088a810a4d
4. काये, कर्विन (फरवरी २००३) मेल प्रोस्टीट्यूशन इन थे ट्वेंटिएथ सेंचुरी : स्यूडो होमोसेक्सुअल्स, हुडलूम होमोसेक्सुअल्स, एंड एक्सप्लोइटेड टीन्स, जॉर्नल ऑफ होमोसेक्सुअलिटी. https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pubmed/15086219
5. फ्राइड मैन, मैक (जुलाई २०१५) मेल सेक्स वर्क फ्रॉम एन्सिएंट टाइम टू द नियर प्रेजेंट, मेल सेक्स वर्क एंड सोसाइटी, हरिंग्टन पार्क प्रेस डॉट कॉम. https://harringtonparkpress.com/wp-content/uploads/2015/07/MaleSexWork_Chapter-1.pdf
6. मेल प्रोस्टीट्यूशन (31 मार्च 2019) विकिपीडिया डॉट ऑर्ग. https://en.wikipedia.org/wiki/Male_prostitution
7. चारित्रिक पतन की पराकाष्ठा है पुरुष वेश्यावृत्ति (१२ जून 2018) दोपहर डॉट इन. http://dopahar.in/news/13089.html
8. अनूप, अनिल, भारत में बढ़ रहे हैं पुरुष सेक्स वर्कर, वेब दुनियां डॉट कॉम. http://hindi.webdunia.com/current-affairs/prostitution-prostitute-sex-worker-sex-116122900064_1.html

RRIJM 2015, All Rights Reserved